सारांश खुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि, स्थान मस्जिद मुबारक,यू.के. बयान फर्मूदः 16 मई 2025

कुछ सैन्य अभियानों के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान तथा दो मृतकों का सदवर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail- ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-16.05.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– आज भी मैं सैन्य अभियानों की चर्चा करूंगा, उसके बाद दूसरा विषय ब्यान करूंगा। सरिय्या अबू क़तादा अनसारी रज़ी. का वर्णन मिलता है, जो खिज़्रा की ओर हुआ। यह सरिय्या शअबान 8 हिजरी में हुआ। यहाँ बनू गत्फ़ान की एक शाखा निवास करती थी। नजद के इलाक़े खिज़्रा के निवासी बनू गत्फ़ान मदीने की रियासत के विरुद्ध उपद्रव फैलाने में व्यस्त थे। एक रिवायत के अनुसार इस अभियान में सहाबा पन्द्रह रातें बाहर रहे और दो सौ ऊँट, एक हज़ार बकरियां और असंख्य बन्दी अपने साथ लाए।

फिर एक वर्णन सरिय्या हजरत अबू क़तादा रज़ी. का है जो इज़म नामक घाटी की ओर हुआ। यह रमज़ान 8 हिजरी, जनवरी 630 ई. के अनुसार हुआ। इस सरिय्ये का कारण यह है कि जब रसूलल्लाह स. ने मक्का को पराजित करने के लिए मक्का की ओर जाने का निश्चय किया तो आप स. ने हज़रत अबू क़तादा को इज़म नामक घाटी की ओर रवाना फ़रमाया जो मदीने से पूरब की ओर है, जबकि मक्का दक्षिण दिशा में है, ताकि लोग यह समझें कि आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की रवानगी मक्के की ओर नहीं बल्कि इज़म की ओर होगी। एक रिवायत के अनुसार इस सैन्य अभियान के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदर्द रज़ी. थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदर्द रज़ी. बयान करते हैं कि जब हम इज़म नामक घाटी में पहुंचे तो वहाँ आमिर बिन अज़्बत अशजई हमारे पास से गुज़रा। उसने उनके पास आकर उन्हें इस्लामी रीति के अनुसार सलाम किया। इस पर मुसलमानों ने

उस व्यक्ति पर हाथ उठाना उचित न समझा, किन्तु हज़रत महल्लम बिन जसामा लैसी रज़ी. का इस व्यक्ति के साथ पहले से कोई झगड़ा था, इस लिए उन्होंने आमिर बिन अज़बत पर हमला करके उसकी हत्या कर दी और उसका ऊँट एवं सामान अपने अधिकार में ले लिया। इसके अतिरिक्त किसी दल से सहाबियों का सामना न हुआ। चूंकि उन्हें केवल मुशरिकों का ध्यान हटाने के लिए भेजा गया था इस लिए सहाबा रज़ी. वहाँ से वापस हो लिए। इसी बीच उन्हें सूचना मिली कि रसूलुल्लाह स. मक्के के लिए रवाना हो गए हैं, अतएव ये भी उसी ओर मुड़ गए, यहाँ तक कि रास्ते में आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिले। जब ये रसूलुल्लाह स. के पास आए तो उस हत्या की पूरे घटना आप स. को बताई तो यह आयत नाज़िल हुई- अर्थात, ऐ वे लोगो, जो ईमान लाए हो! जब तुम अल्लाह की राह में यात्रा कर रहे हो तो सावधानी पूर्वक जांच पड़ताल कर लिया करो, और जो तुम पर सलाम भेजे उससे यह न कहा करो कि तू मोमिन नहीं है। तुम सांसारिक जगत के सामान चाहते हो, तो अल्लाह के पास जीवन चर्या के अत्यधिक सामान हैं। इससे पहले तुम इसी तरह हुआ करते थे, फिर अल्लाह ने तुम पर कृपा की, अतः ख़ूब छान बीन कर लिया करो। निश्चित ही अल्लाह उससे जो तुम करते हो अवगत रहता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- यह सरिय्या 8 हिजरी में हुआ, परन्तु यह आयत सूरः अल-निसा की है जिसके विषय में अधिक सहमति यही है कि यह हिजरत के तीसरे तथा पांचवें वर्ष के बीच अवतरित हुई थी। यह हो सकता है कि इस घटना का पता लगने पर आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ कर अप्रसन्नता अभिव्यक्त की हो।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अब मैं जमात के एक बज़ुर्ग एवं महा विद्वान्, ख़िलाफ़त पर मिटने वाले, दीन के अनोखे सेवक का वर्णन करूंगा, जिनकी पिछले दिनों मृत्यु हो गई है। इसी प्रकार एक अन्य बलिदानी निष्ठावान अहमदी का, जो इन दिनों क़ैद में थे, वहीं उनकी वफ़ात हुई।

पहला वर्णन सय्यद महमूद अहमद नासिर साहब का है जो हज़रत सय्यद मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहब रज़ी. के बेटे थे, जो छियानवे वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। आप हज़रत अम्मा जान रज़ी. के भतीजे, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. और हज़रत मरयम सिद्दीक़ा साहिबा रज़ी. के दामाद थे। आरंभिक शिक्षा इन्होने क़ादियान से प्राप्त की, फिर पंजाब यूनिवर्सिटी से बी.ए. किया, मार्च 1944 में अपने पिता श्री हज़रत सय्यद मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहब रज़ी. के निधन वाले दिन अल्लाह के लिए जीवन समर्पित किया। उस समय सय्यद महमूद अहमद साहब की आयु 14 वर्ष थी। जमाअती सेवाएं इस प्रकार हैं- 1954 से 1957 तक आप यहाँ इंगलिस्तान में थे, आपने मुबल्लिग़ के रूप में कार्य किया तथा इसी बीच स्कूल आफ़ औरंटियल अफ़्रीक़न स्टडीज़ में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के कहने पर शिक्षा भी प्राप्त की। आप हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रह, के साथ थे। 1957 से 1959 तक वकालाते दीवान में आरक्षित मुबल्लिग़

के रूप में सेवारत रहे। फिर 1960 में जामिअह में अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। 1978 से 1982 तक अमरीका में मुबल्लिग़ रहे। 1982 से 1986 तक स्पेन में सेवा करने का अवसर मिला। 1986 से 1989 तक वकीलुत्तसनीफ़ के रूप में काम किया। 1989 से 2010 तक जामिअ: अहमदिय्य: रबवा के प्रधानअध्यापक के रूप में सेवा की, इसी बीच 1994 से जौलाई 2001 तक वाकीलुत्तालीम भी रहे। इसी प्रकार रीसर्च सेल एवं सलीब की घटना के सेल के भी इंचार्ज थे। 2005 में नूर फ़ौंडेशन की स्थापना हुई तो उसके अध्यक्ष नियुक्त हुए, अन्तिम समय तक इसी सेवा पर नियुक्त रहे, मजलिसे इफ़्ता के मेम्बर भी रहे, खुद्दामुल अहमदिया में भी इनको विभिन्न पदों पर मोहतमिम एवं नायब सदर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। ज्ञान के क्षेत्र में इन्होंने क़ुरआने करीम के अनुवाद की तय्यारी में सहयोग किया, सहा-सित्तह और मुसनदे अहमद बिन हम्बल का उर्दू अनुवाद किया, सही-मुस्लिम एवं शुमाइले तिर्मज़ी की व्याख्या की, बाइबल पर इल्मी निबंध लिखे और मसीह के कफ़न एवं मरहमे ईसा पर अनुसंधान किया। इनकी प्रकाशित किताबों में सीरतुन्नबी पर तीन भाग और नमाज़ के बाद दैनिक पाठ के चयन के लिए एक पत्रिका शामिल है। हज़रत खालीफ़तुल मसीह सानी रज़ी ने इनका निकाह अपनी बेटी से पढ़ाया और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रह. ने इनके बेटे का निकाह पढ़ाया।

1990 में आप पर एक मुक़दमा क़ायम हुआ जो मजलिसे शूरा में अपने विचार की अभिव्यक्ति के कारण हुआ था। जज ने आपको कहा कि आपने तक़रीर में आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ी. की निन्दा की है, इसपर आपने कहा कि यह मुझ पर आरोप है, यह पूर्णतः झूठ है। मैं नबी करीम स. और सहाबा रज़ी. का दिल से सम्मान करता हूँ और उनकी रिसालत पर व्यापक ईमान रखता हूँ। जज के सामने उन्होंने बड़े साहस के साथ यह ब्यान दिया। दीन का ज्ञान जिसमें इस्लाम के अतिरिक्त यहूदियत एवं ईसाइयत इत्यादि का भी ज्ञान था, धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन में आप विशेष रूप से निपुण थे, सदेव इस बात की नसीहत करते थे कि क़ुराने करीम, सुन्नते रसूलुल्लाह स, सही हदीसें और हज़रत मसीह मौऊद अलै. तथा आप अलै. के ख़लीफ़ाओं से धर्म शस्त्र का ज्ञान प्राप्त करो।

मुबश्शिर अयाज़ साहब लिखते हैं कि मीर साहब ने एक अत्यंत निर्दोष एवं पवित्र जीवन व्यतीत किया, अत्यंत प्रिय परन्तु विनम्र एवं विनय पूर्ण, धैर्य एवं संतोष का एक अति उत्तम उदाहरण बन कर रहे, ज्ञान एवं विवेक का एक सागर थे, महान विद्वान थे, टीकाकार भी थे, हदीसविद भी थे। अहमदिय्या जमाअत के इतिहास में ये पहले भाग्य शाली विद्वान हैं जिन्हें क़ुराने करीम का अनुवाद करने के साथ साथ पूरी सहा सित्ता का उर्दू में अनुवाद करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ।

तनवीर अहमद नासिर हैं मुरब्बी, क़ादियान में, कहते हैं कि एक याद जो मुझे सदेव उनकी रहती है, वह यह है कि एक दिन क़ादियान की मस्जिदे मुबारक में मैं बैठा हुआ था तो मीर साहब

मस्जिद की पहली सफ़ में टहल रहे थे। मुझे उनका यह टहलना और दुआएं करना बड़ा अच्छा लगा। कुछ देर के बाद मुझे साहस हुआ, मैंने आगे बढ़ कर निवेदन किया कि आप मस्जिद की पहली सफ़ में टहल रहे हैं इसका क्या कारण है। उन्होंने बताया कि मैंने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को इस जगह टहलते हुए देखा था और मैं भी उन्हीं के पद-चिन्हों पर टहल रहा हूँ, अदभुत प्रेम था हज़रत मुस्लेह मौऊद से तो।

अतएव ख़िलाफ़त के एक महान सहयोगी एवं सहायक थे, बलिदानी थे, शब्द शब्द पर अमल करने वाले थे। वफ़ादार थे एवं ऐसे सुल्ताने नसीर थे जो कम ही मिलते हैं, सक्रिय विद्वान् थे। मुझे तो कम से कम इन जैसा कोई उदाहरण अभी तक नज़र नहीं आता। अल्लाह के ख़ज़ाने में तो कोई कमी नहीं है, अल्लाह तआला करे कि ऐसे उदाहरण और भी पैदा हो जाएं और ऐसे वफ़ादार एवं निष्ठावान और तक़वा पर चलने वाले सहायक अल्लाह तआला ख़िलाफ़ते अहमदिय्या को प्रदान करता रहे।

दूसरा वर्णन एक अहमदी का है, डा. महमूद साहब सुपुत्र श्री गुलाम रसूल साहब, कराची थे जिनकी पिछले दिनों क़ैद में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। मरहूम ताहिर महमूद साहब सद्र हल्क़ा मलीर कालोनी कराची तथा दो अन्य दोस्तों को मालीर कालोनी कराची में अहमदिया मस्जिद के निर्माण के रूप एवं वहाँ जुमः की नमाज़ अदा करने को आधार बनाकर गिरफ़्तार किया गया और अदालत में विरोधियों की भीड़ ने उन पर हमला किया, हिंसा का निशाना बनाया और पुलिस स्टेशन में भी उन पर हिंसा की गई। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. और ख़लीफ़ाओं के विरुद्ध अपशबद बोलने पर विवश किया गया। जेल में दो महीने रहे, निधन से कुछ दिन पूर्व गुर्दों में संक्रमण के कारण स्वास्थ्य बिगड़ गया और हस्पताल में निधन हो गया। निधन के समय हस्पताल में भी इनके हाथों के हथकड़ियां लगी हुई थीं। बन्दी रहने के समय कठिनाइयों को सहन करते रहे, इस दृष्टि से इनको शहादत का ही स्तर मिलता है। वसिय्यत के निजाम में भी शामिल थे और सद्र के रूप में तथा सैकरेटरी दा वत इल्लल्लाह सेवा करते रहे। इनके परिजनों में पत्नी के अतिरिक्त एक बेटी एवं तीन बेटे शामिल हैं, बेटे सिलसिले के मुरब्बी हैं। दित्तीय ख़ुत्ब: से पहले हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि नमाज़ के बाद जनाज़ा की नमाज़ ग़ायब होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब- 18001032131